“स्मृति स्वरूप, अनुभवी मूर्त बन सेकण्ड की तीव्रगति से परिवर्तन कर पास विद ऑनर बनो"

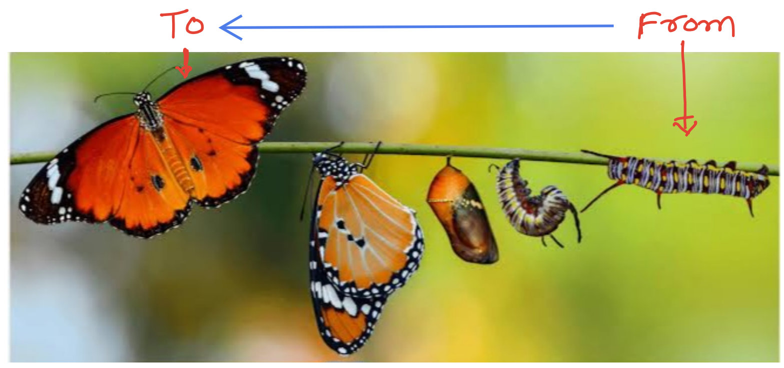

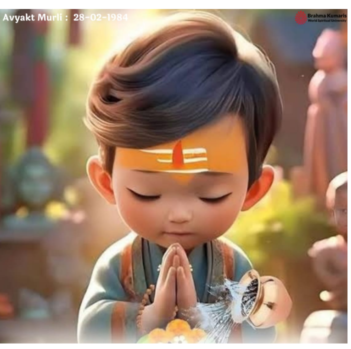

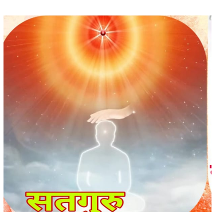

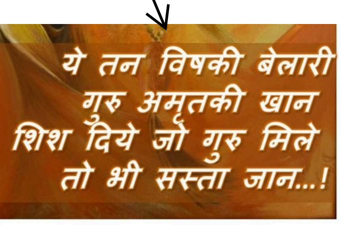

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों में तीन विशेष भाग्य की रेखायें मस्तक में चमकती हुई देख रहे हैं। सभी के मस्तक भाग्य की रेखाओं से चमक रहे हैं। एक है परमात्म पालना के भाग्य की रेखा। दूसरी है श्रेष्ठ शिक्षक द्वारा शिक्षा के भाग्य की रेखा। तीसरी है सतगुरू द्वारा श्रीमत के भाग्य की रेखा। वैसे तो भाग्य आपका अथाह है फिर भी आज यह विशेष तीन रेखायें देख रहे हैं। आप भी अपने मस्तक में चमकती हुई रेखायें अनुभव कर रहे हो ना! सबसे श्रेष्ठ है परमात्म प्यार के पालना की रेखा। जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा है तो परमात्म पालना भी ऊंचे ते ऊंची है। यह पालना कितने थोड़ों को प्राप्त होती है, लेकिन आप सब इस पालना के पात्र बने हो। यह पालना सारे कल्प में आप बच्चों को एक ही बार प्राप्त होती है। अब नहीं तो कब प्राप्त नहीं हो सकती। यह परमात्म पालना, परमात्म प्यार,

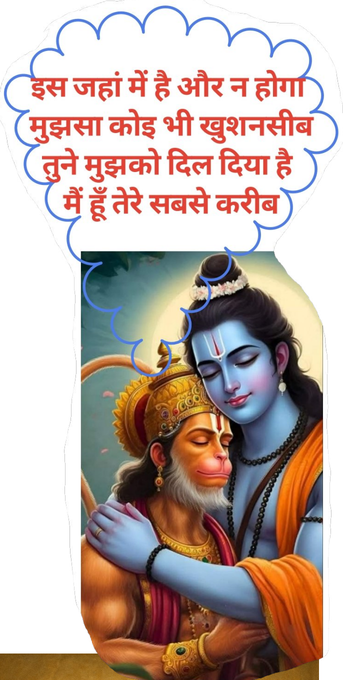

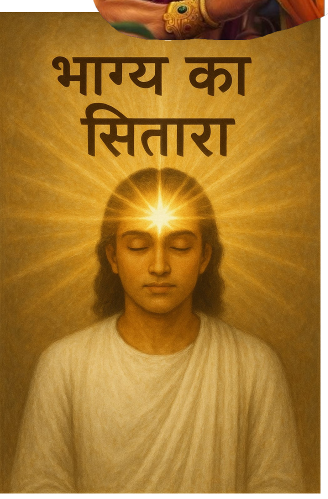

परमात्म प्राप्तियां कोटों में कोई आत्माओं को ही अनुभव होती है। आप सभी तो अनुभवी हो ना! अनुभव है? पालना का भी अनुभव है, पढ़ाई और श्रीमत का भी अनुभव है? अनुभवी मूर्त हो? तो सदा अपने मस्तक में यह भाग्य का सितारा चमकता हुआ दिखाई देता है, सदा? या कभी चमकता हुआ सितारा डल भी हो जाता है क्या? ढीला नहीं होना चाहिए। अगर चमकता हुआ सितारा ढीला होता है तो उसका कारण क्या है? जानते हो?

Attention...!

ये पकका समझ लो

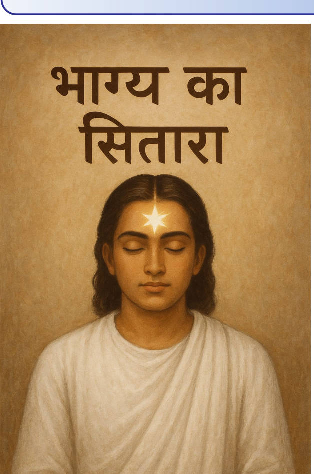

बापदादा ने देखा है कि कारण है स्मृति स्वरूप नहीं बने हो। सोचते हो मैं आत्मा हूँ, लेकिन सोचता स्वरूप बनते हो, स्मृति स्वरूप कम बनते हो। जब तक स्मृति स्वरूप सदा नहीं बनते तब तक समर्थी नहीं आ सकती। स्मृति ही समर्थी दिलाती है। स्मृति स्वरूप ही समर्थ स्वरूप है इसलिए भाग्य का सितारा कम चमकता है। अपने आपसे पूछो कि ज्यादा समय सोच स्वरूप बनते हो वा स्मृति स्वरूप बनते हो? सोच स्वरूप बनने से सोचते बहुत अच्छा हो, मैं यह हूँ, मैं यह हूँ, मैं यह हूँ....

पूछो अपने आप से...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Point to be Noted

लेकिन स्मृति स्वरूप न होने के कारण अच्छा सोचते भी व्यर्थ संकल्प, साधारण संकल्प मिक्स हो जाते हैं। वास्तव में देखा जाए तो आपका अनादि स्वरूप स्मृति सो समर्थ स्वरूप है। सोचने वाला स्वरूप नहीं है। और आदि में भी इस समय के स्मृति स्वरूप की प्रालब्ध प्राप्त होती है। तो अनादि और आदि स्मृति स्वरूप है और इस समय अन्त में संगम समय पर भी स्मृति स्वरूप बनते हो। तो आदि अनादि और अन्त तीनों कालों में स्मृति स्वरूप हो। सोचना स्वरूप नहीं हो, इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा कि वर्तमान समय अनुभवी मूर्त बनना श्रेष्ठ स्टेज है। सोचते हो आत्मा हूँ, परमात्म प्राप्ति है, लेकिन समझना और अनुभव करना इसमें बहुत अन्तर है। अनुभवी मूर्त कभी भी न माया से धोखा खा सकता, न दु:ख की अनुभूति कर सकता। यह जो बीच-बीच में माया के खेल देखते हो, या खेल खेलते भी हो, उसका कारण है अनुभवी मूर्त की कमी है। अनुभव की अथॉरिटी सबसे श्रेष्ठ है। तो बापदादा ने देखा कि कई बच्चे सोचते हैं लेकिन स्वरूप की अनुभूति कम है।

Mind Very Well...

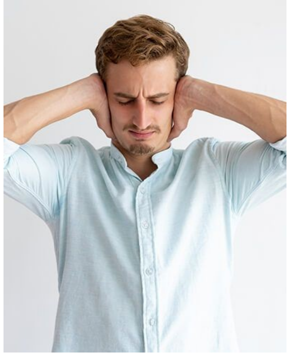

Characteristics of

आज की दुनिया में मैजॉरिटी आत्मायें देखने और सुनने से थक गये हैं लेकिन अनुभव द्वारा प्राप्ति करने चाहते हैं। तो अनुभव कराना, अनुभवी ही करा सकता है। और अनुभवी आत्मा सदा आगे बढ़ती रहेगी, उड़ती रहेगी क्योंकि अनुभवी आत्मा में उमंग-उत्साह सदा इमर्ज रूप में रहता है। तो चेक करो (1) हर प्वाइंट के अनुभवी मूर्त बने हैं? (2) अनुभव की अथॉरिटी आपके हर कर्म में दिखाई देती है? (3) हर बोल, हर संकल्प अनुभव की अथॉरिटी से है या सिर्फ समझने के आधार पर है? एक है समझना, दूसरा है अनुभव करना। हर सबजेक्ट में, ज्ञान की प्वाइंट्स वर्णन करना, वह तो बाहर के स्पीकर भी बहुत स्पीच कर लेते हैं। लेकिन हर प्वाइंट का अनुभवी स्वरूप बनना, यह है ज्ञानी तू आत्मा। योग लगाने वाले बहुत हैं, योग में बैठने वाले बहुत हैं, लेकिन योग का अनुभव अर्थात् शक्ति स्वरूप बनना और शक्ति स्वरूप की परख यह है कि जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय उस शक्ति को आह्वान कर निर्विघ्न स्वरूप बन जाए। अगर एक भी शक्ति की कमी है, वर्णन है लेकिन स्वरूप नहीं है तो भी समय पर धोखा खा सकते हैं। चाहिए सहनशक्ति और आप

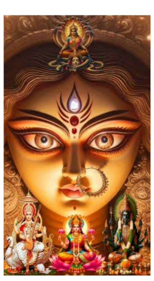

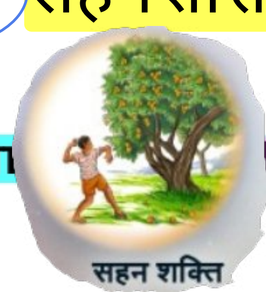

Points: ज्ञान योग धारणा M.imp.

यूज़ करो सामना करने की शक्ति, तो योगयुक्त अनुभवी स्वरूप नहीं कहेंगे। चार ही सबजेक्ट में स्मृति स्वरूप वा अनुभवी स्वरूप की निशानी क्या होगी? स्थिति में निमित्त भाव, वृत्ति में सदा शुभ भाव, आत्मिक भाव, नि:स्वार्थ भाव। वायुमण्डल में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा निर्मान भाव, वाणी में सदा निर्मल वाणी। यह विशेषतायें अनुभवी मूर्त की हर समय नेचुरल नेचर होगी। नेचुरल नेचर। अभी कई बच्चे कभी-कभी कहते हैं कि हम चाहते नहीं हैं यह करें लेकिन मेरी पुरानी नेचर है। नेचर नेचुरल काम वही करती है, सोचना नहीं पड़ता, लेकिन नेचर नेचुरल काम करती है। तो अपने को चेक करो - मेरी नेचुरल नेचर क्या है? अगर कोई भी पुरानी नेचर अंश मात्र भी है, तो हर समय वह कार्य में आते-आते पक्का संस्कार बन जाता है। उस पुरानी नेचर, पुराने स्वभाव, पुराने संस्कार को समाप्त भी करना चाहते हो लेकिन कर नहीं पाते हो, उसका कारण क्या है? नॉलेजफुल तो सबमें बन गये हो, लेकिन जो चाहते हो होना नहीं चाहिए, वह हो जाता है, तो कारण क्या है? परिवर्तन करने की शक्ति कम है। मैजॉरिटी में दिखाई देता है कि परिवर्तन की शक्ति को समझते भी हैं, वर्णन भी

Automatically or unconsciously
e.g. Gear switching while driving the Bike or car

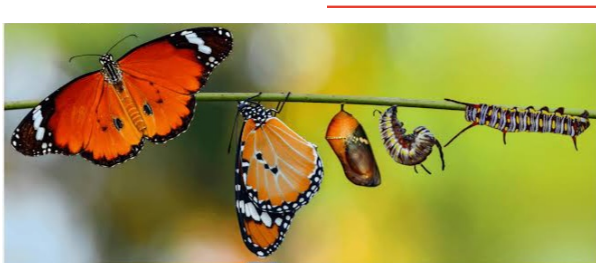

Metamorphosis

Attention Please...!

करते हैं, अगर सभी को परिवर्तन शक्ति की टॉपिक पर लिखने के लिए कहें या भाषण करने के लिए कहें तो बापदादा समझते हैं सभी बहुत होशियार हैं, बहुत अच्छा भाषण भी कर सकते हैं, लिख भी सकते हैं और दूसरा कोई आता है उसको समझाते भी बहुत अच्छा हैं - "कोई हर्जा नहीं, परिवर्तन कर लो।" लेकिन स्वयं में परिवर्तन करने की शक्ति कहाँ तक है! वर्तमान समय के महत्व को जानते हुए परिवर्तन करने में समय नहीं लगाना चाहिए। सेकण्ड में परिवर्तन की शक्ति काम में आये क्योंकि जब समझते हो होना नहीं चाहिए, तो समझते हुए भी अगर परिवर्तन नहीं कर पाते हो, उसका कारण है? सोचते हो लेकिन स्वरूप नहीं बने हो। सोचना स्वरूप सारे दिन में ज्यादा बनते हो, स्मृति सो समर्थ स्वरूप वह मैजॉरिटी कम है।

Result

जागो जागो, समय पहचानो...

अभी तीव्रगति का समय है, तीव्र पुरुषार्थ का समय है, साधारण पुरुषार्थ का समय नहीं है, सेकण्ड में परिवर्तन का अर्थ है - स्मृति स्वरूप द्वारा एक सेकण्ड में निर्विकल्प, व्यर्थ संकल्प निवृत्त हो जाए, क्यों? समय की समाप्ति को समीप लाने वाले

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Great Swamaan

निमित्त हो। तो अभी के समय के महत्व प्रमाण जब जानते भी हो कि हर कदम में पदम समाया हुआ है, तो बढ़ाने का तो बुद्धि में रखते हो लेकिन गवॉने का भी तो बुद्धि में रखो। अगर कदम में पदम बनता भी है तो कदम में पदम गंवाते भी तो हो, या नहीं? तो अभी मिनट की बात भी गई, दूसरों के लिए कहते हो वन मिनट साइलेन्स में रहो लेकिन आप लोगों के लिए सेकण्ड की बात होनी चाहिए। जैसे हाँ और ना सोचने में कितना टाइम लगता है? सेकण्ड। तो परिवर्तन शक्ति इतनी फास्ट चाहिए। समझा ठीक है, नहीं ठीक है, ना ठीक को बिन्दी और ठीक को प्रैक्टिकल में लाना है। अभी बिन्दी के महत्व को कार्य में लगाओ। तीन बिन्दियों को तो जानते हो ना! लेकिन बिन्दी को समय पर कार्य में लगाओ। जैसे साइंस वाले सब बात में तीव्र-गति कर रहे हैं और परिवर्तन की शक्ति भी ज्यादा कार्य में लगा रहे हैं। तो साइलेन्स की शक्ति वाले अभी लक्ष्य रखो अगर परिवर्तन करना है, नॉलेजफुल हो तो अभी पावरफुल बनो, सेकण्ड की गति से। कर रहे हैं, हो जायेंगे... कर लेंगे.., नहीं। हो सकता है या मुश्किल है? क्योंकि लास्ट समय सेकण्ड का पेपर आना है, मिनट का नहीं, तो सेकण्ड का अभ्यास बहुतकाल का होगा तब तो सेकण्ड में पास विद

आनर बनेंगे ना! परमात्म स्टूडेन्ट हैं, परमात्म पढ़ाई पढ़ रहे हैं, तो पास विद ऑनर बनना ही है ना! पास मार्क्स लिया तो क्या हुआ! पास विद ऑनर। क्या लक्ष्य रखा है? जो समझते हैं पास विद ऑनर बनना है वह हाथ उठाओ, पास विद ऑनर? ऑनर शब्द अण्डरलाइन करना। अच्छा। तो अभी क्या करना पड़ेगा? मिनट मोटर तो कामन है, अभी सेकण्ड का काम है।

हाँ पंजाब वाले, अभी सेकण्ड का मामला है। इसमें नम्बरवन कौन होगा? पंजाब। क्या बड़ी बात है। जितना फ़लक से कहते हो, बहुत अच्छा कहते हो, फ़लक से कहते हो, बापदादा जब सुनते हैं बहुत खुश होते हैं, कहते हो - क्या बड़ी बात है, बापदादा साथ है। तो साथ तो अथॉरिटी है, तो क्या करना है अभी? अभी तीव्र बनना पड़ेगा। सेवा तो कर रहे हो, और सेवा के बिना और करेंगे भी क्या? खाली बैठेंगे क्या? सेवा तो ब्राह्मण आत्माओं का धर्म है, कर्म है। लेकिन अभी सेवा के साथ-साथ समर्थ स्वरूप, जितना सेवा का उमंग-उत्साह दिखाया है,

बापदादा खुश है, मुबारक भी देते हैं। लेकिन जैसे सेवा का ताज मिला है ना! (युवा पद यात्री ताज पहनकर बैठे हैं) ताज पहना हुआ है, देखो कितना अच्छा लग रहा है। अभी स्मृति स्वरूप बनने का ताज पहनके दिखाना। यूथ ग्रुप है ना! तो कमाल क्या करेंगे? सेवा में भी नम्बरवन और समर्थ स्वरूप में भी नम्बरवन। सन्देश देना भी ब्राह्मण जीवन का धर्म और कर्म है लेकिन अभी बापदादा इशारा दे रहा है कि परिवर्तन की मशीनरी तीव्र करो। नहीं तो पास विद ऑनर होने में मुश्किल हो जायेगा। बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। सोचा और किया। सिर्फ सोचना स्वरूप नहीं बनो, समर्थ स्मृति सो समर्थ स्वरूप बनो। व्यर्थ को तीव्र गति से समाप्त करो। व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ समय और सम्बन्ध-सम्पर्क में भी व्यर्थ विधि, रीति सब समाप्त करो। जब ब्राह्मण आत्मायें तीव्रगति से यह स्व के व्यर्थ की समाप्ति करेंगे तब आत्माओं की दुआयें और अपने पुण्य का खाता तीव्रगति से जमा करेंगे।

Attention Please...!

NO GARBAGE

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि बापदादा तीन खाते चेक करते हैं। पुरुषार्थ की गति का खाता, दुआओं का खाता, पुण्य का खाता लेकिन मैजॉरिटी के खाते अभी भरपूर कम हैं इसलिए बापदादा आज यही स्लोगन याद दिला रहे हैं कि अब तीव्र बनो, तीव्र पुरुषार्थी बनो। तीव्र गति से समाप्ति वाले बनो। तीव्र गति से मन्सा द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन वाले बनो।

बापदादा एक बात में सभी बच्चों पर बहुत खुश भी है। किस बात में? प्यार सबका बाप से जिगरी है, इसकी मुबारक है। लेकिन बोलूं क्या करो! इस सीजन की समाप्ति तक, अभी तो टाइम पड़ा है, इस सीजन की समाप्ति तक तीव्र गति का कुछ न कुछ जलवा दिखाओ। पसन्द है? पसन्द है? जो समझते हैं लक्ष्य और लक्षण दोनों ही स्मृति में रखेंगे, वह हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स भी रखेंगे, टीचर्स भी रखेंगे और यूथ भी रखेंगे और पहली लाइन वाले भी रखेंगे! तो पदम, पदम, पदमगुणा इनएडवांस मुबारक हो। अच्छा।

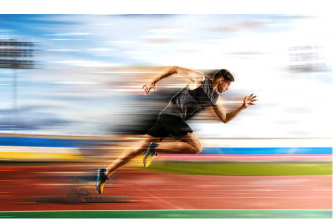

अभी-अभी अभ्यास करो - एक सेकण्ड में निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प बन एकाग्र, "एक बाप दूसरा न कोई", इस एक ही संकल्प में एकाग्र होकर बैठ सकते हो! और कोई संकल्प नहीं हो। एक ही संकल्प की एकाग्रता शक्ति के अनुभव में बैठ जाओ। टाइम नहीं लगाना, एक सेकण्ड में। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों को जिन्होंने भी विशेष याद प्यार भेजा है, वह हर एक बच्चा अपने नाम से यादप्यार और दिल की दुआयें स्वीकार करना। बापदादा देख रहे हैं कि सभी के दिल में आता है, हमारी भी याद, हमारी भी याद, लेकिन आप बच्चे संकल्प करते हो और बापदादा के पास उसी समय ही पहुंच जाता है इसलिए सभी बच्चों को हर एक को नाम और विशेषता सम्पन्न यादप्यार दे रहे हैं।

तो सभी सदा स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप, अनुभव स्वरूप श्रेष्ठ बच्चों को, सदा जो शुभ सोचा वह तुरत किया, जैसे तुरत दान का महत्व है वैसे तुरत परिवर्तन का भी महत्व है। तो तुरत परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक बच्चों को, सदा परमात्म

पालना, परमात्म प्यार, परमात्म पढ़ाई और परमात्म श्रीमत को हर कर्म में लाने वाले महावीर बच्चों को, सदा हिम्मत और एकाग्रता, एकता द्वारा नम्बरवन तीव्र पुरुषार्थ करने वाले बच्चों को बापदादा के दिल का यादप्यार और दिल की दुआयें और नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

दादियों से:- सभी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। बापदादा हर एक के पार्ट को देख खुश होते हैं। छोटे छोटे भी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। ऐसे नहीं समझना हम तो छोटे हैं। छोटे सुभान अल्लाह हैं। शक्तियों का अपना पार्ट है, पाण्डवों का अपना पार्ट है। पाण्डव नहीं हों तो भी काम नहीं चले, शक्तियां नहीं हो तो भी काम नहीं चले, इसीलिए भारत में चतुर्भुज का यादगार है। और कोई भी धर्म में चतुर्भुज नहीं दिखाते लेकिन भारत के यादगार में चतुर्भुज का महत्व है। तो दोनों अच्छा पार्ट बजा रहे हैं लेकिन अभी जल्दी करना है, बस। कभी-कभी थोड़ा ढीला पड़ जाते हैं। **अभी ढीले पड़ने का समय नहीं है।** बातें तो भिन्न-भिन्न होती ही हैं लेकिन हमें बातों का राज़ समझ राज़युक्त, योगयुक्त, स्नेहयुक्त, सहयोग युक्त बन चलना है। अच्छा है ना।

Attention Please...!

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

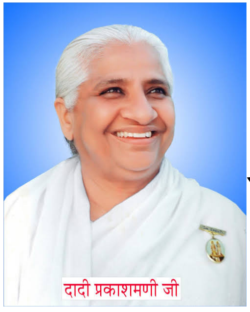

(दादी जी से) बहुत अच्छा लगता है ना? देखो कितने आये हैं? क्यों आये हैं? यह सभी क्यों आये हैं! आप से मिलने आये हैं। बापदादा से तो मिलने आये हैं लेकिन साथ में दादियां नहीं हों तो कहते हैं ना मजा नहीं आता। और आप सभी नहीं हो तो भी मजा नहीं होता।

31-08-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-12-06 मधुबन

वरदान:- स्मृति के स्विच द्वारा स्व कल्याण और सर्व का कल्याण करने वाले सिद्धि स्वरूप भव

Most imp. *Point to ponder deeply*

स्थिति का आधार स्मृति है। यह शक्तिशाली स्मृति रहे कि " मैं बाप का और बाप मेरा।"

तो इसी स्मृति से स्वयं की स्थिति शक्तिशाली रहेगी और दूसरों को भी शक्तिशाली बनायेंगे।

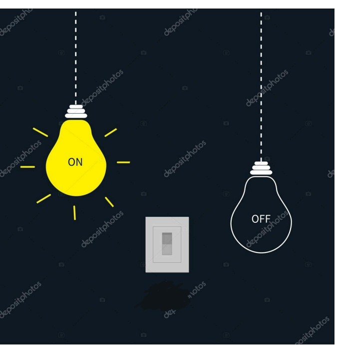

जैसे स्विच आन करने से रोशनी हो जाती है ऐसे यह स्मृति भी एक स्विच है। सदा स्मृति रूपी स्विच का अटेन्शन हो तो स्वयं का और सर्व का कल्याण करते रहेंगे।

नया जन्म हुआ तो नई स्मृतियां हों। पुरानी सब स्मृतियां समाप्त - इसी विधि से सिद्धि स्वरूप का वरदान प्राप्त हो जायेगा।

स्लोगन:- अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करने के लिए अपने शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित रहो।

ोग धारणा सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे -

सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

बाप-दादा प्रेम के बंधन में बंधे हुए हैं। छूटने चाहें तो भी छूट नहीं सकते हैं,

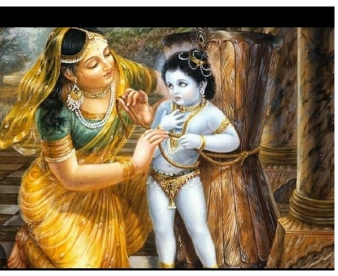

इसीलिए भक्ति में भी बंधन का चित्र दिखाया है। प्रैक्टिकल में प्रेम के बन्धन में अव्यक्त होते भी बंधना पड़ता है।

व्यक्त से छुड़ाया फिर भी छूट नहीं सके। यह प्रेम की रस्सी बहुत मजबूत है।

ऐसे प्रेम स्वरूप बन, एक दो को प्रेम की रस्सी में बांध समीप सम्बन्ध की वा अपने-पन की अनुभूति कराओ।

15

वर्तमान समय रूहानी दृष्टि और वृत्ति के अभ्यास की बहुत आवश्यकता है। 75 परसेन्ट इस रूहानियत के अभ्यास में कमजोर हैं। मैजारिटी किसी-न-किसी प्रकार के प्रकृति के आकर्षण के वशीभूत हो ही जाते हैं। व्यक्ति व वैभव कभी-न-कभी अपने वश कर लेता है। उसमें भी मन्सा संकल्प के चक्कर में खूब परेशान होने वाले हैं। इस परेशानी के कारण स्वयं से दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। वास्तव में ब्राह्मण आत्मा अगर संकल्प में विकारी दृष्टि और वृत्ति रखती हैं - तो ऐसी भावना रखने वाले भी महापापी की लिस्ट में आ जाते हैं। ब्राह्मण अर्थात दिव्य-बुद्धि के वरदान वाले। दिव्य नेत्र के वरदान वाले, ऐसे दिव्य बुद्धि और दिव्य नेत्र वाले बुद्धि में संकल्प द्वारा दिव्य नेत्र में एक सेकण्ड के लिए भी नजर द्वारा इस चमड़ी को व जिस्म को टच भी नहीं कर सकते। दिव्य बुद्धि का, दिव्यनेत्र का शुद्ध आहार और व्यवहार शुद्ध संकल्प हैं। अगर अपने शुद्ध संकल्प रूपी आहार अर्थात भोजन को छोड़ अशुद्ध आहार स्वीकार करते हो अर्थात् संकल्प के वशीभूत हो जाते हैं तो ऐसे मलेच्छ भोजन वाले मलेच्छा आत्मा कहलायेंगे। अर्थात् महापापी, आत्मघाती कहलायेंगे। इसलिए इस महापाप का दण्ड बहुत वड़े रूप में भोगना पड़ेगा। इसलिए दिव्य बुद्धि और सदा शुद्ध आहारी बनो। समझा? 31/8/25

Result

m.m.m. Imp.

महाकाल उवाच:

(19.09.1975)

3.3 सागर की लहरों में समाते जाओ :

(अ) सारा दिन क्या अनुभव करते ? प्यार की लहरें स्वत: उछलती हैं ना !

सागर की बाहों में मौज़ें है जितनी
हमको भी तुमसे मोहब्बत है उतनी
के ये बेक़रारी ना अब होगी कम
बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम

अमृतवेला

31/8/25

जितना-जितना ज्ञान-सूर्य की किरणें वा प्रकाश बढ़ता है, उतना ही ज़्यादा प्यार की लहरें उछलती हैं। अमृतवेले ज्ञान-सूर्य की ज्ञान-मुरली क्या काम करती ? खूब लहरें उछालती है ना ! सब अनुभवी हो ना ! कैसे ज्ञान की लहरें, प्रेम की लहरें, सुख की लहरें, शान्ति और शक्ति की लहरें उछलती हैं और उन ही लहरों में समा जाते हो। यही अलौकिक वर्सा प्राप्त कर लिया है ना ! यही ब्राह्मण-जीवन है। लहरों में समाते-समाते सागर समान बन जायेंगे।

सर्वशक्तिमान ईश्वर को सिर्फ और सिर्फ प्रेम से ही हम अपना बना सकते हैं।

वरदान:- स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति को समाप्त करने वाले सम्पूर्ण ज्ञानी भव

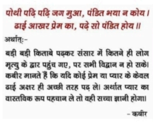

स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है। स्नेह ब्राह्मण जन्म का वरदान है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा 12

11-12-2024 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग पर स्नेह का सागर स्नेह के हीरे मोतियों की थालियां भरकर दे रहे हैं, तो स्नेह में सम्पन्न बनो।

स्नेह की शक्ति से परिस्थिति रूपी पहाड़ परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन जायेगा। माया का कैसा भी विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ। तो स्नेह की शक्ति से माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी।

Point to be Noted

या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है। ये पक्का समझ लो

Short cut

m.m.m.....Imp

Point to be Noted for life time

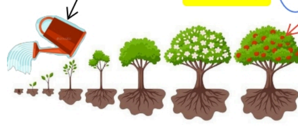

ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

30/11/05

सुनाया था, मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है - दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप

08-06-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप

उस सर्वशक्तिमान को हम अपने सच्चे प्रेम से ही प्राप्त कर सकते हैं नहीं तो चाहे कितना ही ज्ञान पढ़ ले लेकिन हम उस सर्वशक्तिमान को नहीं पा सकते। प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है उस सच्चे माशूक के प्रेम में डूब जाना।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

अर्थात्:-

बड़ी बड़ी किताबे पढ़कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले। अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

\- कबीर

Example

कार्तिकेय और गणेश दोनों ही शिव और पार्वती/ब्रह्मा माँ के बच्चे हैं लेकिन कार्तिकेय ज्ञान के आधार पर चलता है और गणेश ज्ञान और दिल के सच्चे प्रेम के आधार पर चलता है
इसलिए शास्त्रों में बताया है कि जब सारी सृष्टि का सात बार चक्कर लगाने की बात आई तो कार्तिकेय चक्कर ही लगाता रहा और गणेश ने अपने माता-पिता अर्थात शिव बाबा और ब्रह्मा माँ को ही अपनी सृष्टि मानकर उनके सात फेरे लगा लिए और कुछ ही पल में वह विजय हो गया।

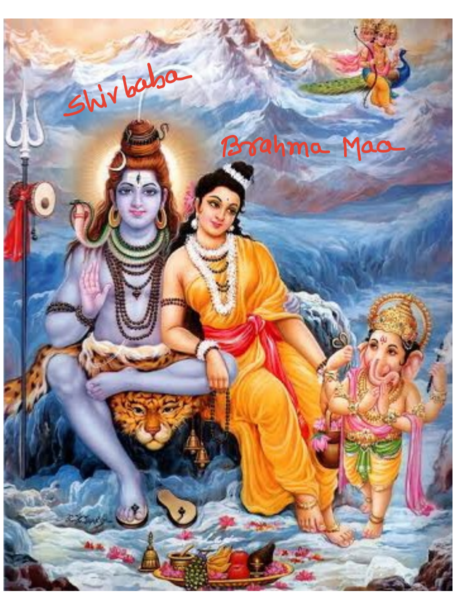

Example

जब यशोदा जी ने श्री कृष्ण को अपने अहंकार से बांधना चाहा तो सभी रस्सियाँ छोटी पड़ गई किंतु जब उन्होंने समर्पण भाव से प्यार की रस्सी में उनको बांधना चाहा तो श्री कृष्ण अपने आप ही बंध गए।

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो,
वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरू परन्तु
चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।
यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई। m.m.m. Imp
यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है।

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वेसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।
एक तो बाप के सम्बन्ध में-'फरमान वरदार',
शिक्षक के सम्बन्ध में-'इमानदार' और
गुरू के सम्बन्ध में-'आज्ञाकारी' और
साजन के सम्बन्ध में-'वफादार।'

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

AV- 21/7/73

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व- सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्पलेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी नीचे गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?
AV- 11/07/74

In Short, बाबा को हम साजन तो बनाते ही है किंतु चु की वो भी आत्मा ही है तो सजनी भी बना सकते है....
क्योंकि आत्मा में विष्णु चतुर्भुज अर्थात male and Female दोनों के संस्कार विद्यमान है।

हमारे प्राणो से भी प्यारे शिवबाबा - जिनके बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं हैं।
क्योंकि हम जब उनसे बिछड़े तब से जैसे की शरीर से रूह निकल जाने के बाद जो शरीर की हालत होती हैं, वैसी ही मुझ आत्मा की हालत थी।
किन्तु अब वो मिल गए हैं तो हम फिर से अपने को जिन्दा महसूस करते हैं।

और भी....
माया की अक्षोहिणी सेना के सामने हमारी अकेले की हैसियत एक चींटी जितनी भी नहीं हैं और अगर प्यारे बाबा साथ/Combined हैं तो उस माया की हैसियत हमारे सामने चींटी से भी पदम् गुना कम हो जाती हैं।

तो आज ये गीत समर्पित है उस प्राणों से प्यारे सच्चे साथी शिवबाबा को...
★■◆●★■◆●★■◆●

link of this song
↓
Click

तेरी साँसों की सांस में
जो हूँ तो मैं हूँ

(ओ मेरे प्राणप्यारे साथी...!
जैसे कोई भी मनुष्य को जिंदा रहने के लिए साँस लेना अनिवार्य है, अगर साँस नहीं तो जीवन नहीं ..

वैसे ही आपकी साँस अर्थात सारे विश्व को संपन्न बनाने के आपके जो कल्याणकारी संकल्प चलते हैं तो उन संकल्पों को पूरा करने के लिए आप जिस निमित को याद करते हो तो वो मैं ही तो हूँ ।)

तेरे ख्वाबों की आंच में
जो हूँ तो मैं हूँ

(इस पतित श्रुष्टि को सम्पूर्ण पावन बनाने का जो आपका ख्वाब हैं - तो उस ख्वाब को पूरा करने अर्थ आपका सर्व श्रेष्ठ instrument/ Right hand भी तो मैं ही हूँ।

In short, आप के संकल्प वा स्वप्न में भी मैं ही तो हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना

(जैसे आप मेरे बिना नहीं रह सकते
वैसे ही आपके होने से ही तो मेरा भी होना/अस्तित्व हैं और मैं जब परमधाम से यहां पार्ट बजाने आती हूं अर्थात आप से दूर होती हूं या आपको खो देती हूं तो जैसे आपको नहीं परंतु स्वयं को ही खो देती हूं
क्युकी जैसे जिस्म और जान/आत्मा एक दूजे के बिना रह नहीं सकते वैसे ही मैं जिस्म हूं और आप मेरी जान/आत्मा।)

तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

(तो... अगर आप हो तो ही मेरा अस्तित्व हैं और
अगर यूँ ही/इस प्रकार ही हम दोनों combined हैं तो ही मैं अपने को जिन्दा पाता हूँ। अर्थात तुम नहीं तो मैं भी नहीं।)

@@@@@@@@

बिन तेरे मेरा क्या है
जिसको सुनू जिसको कहूँ

(ओ मेरे प्राणों के प्राण,
मुझे आप जरा ये तो बताईये की
आप के बिना मेरा इस जहान में हैं ही क्या वा है ही कौन..?
जिसको मैं कुछ कहूँ या फिर जिस से मैं कुछ सुनु...)

बिन तेरे मुझ में क्या है
जिसको जियूं जिस में रहूँ

(या फिर ये बताईये की
आप के बिना मुज मैं रिंचक मात्र भी ऐसा क्या हैं की जिसको मैं जीऊ या फिर जिसमे मैं रहूँ...?)

तुझ में ही दुनिया मेरी है
तेरे एक पल में सदियाँ मेरी

(मेरे प्राणनाथ, मेरे साजन ...
आप में ही तो मेरी सारी दुनिया हैं अर्थात अभी ही साकार मनुष्य श्रुष्टि मेरे लिए भस्म हुई पड़ी हैं।
और आप के साथ मैं अभी इस संगम पर जो एक पल भी बिताता हूँ तो वो मुझे आपके साथ सदियाँ बिताने का अनुपम सुख प्रदान करता हैं और उस ही सुख में मैं सदैव रहना चाहता हूँ।)

बिन तेरे मैं सहरा(सहरा के हिंदी अर्थ · मरुस्थल, रेगिस्तान, मरुभूमि, वो जगह जहाँ पानी घास और पेड़ आदि कुछ भी न हो) सा हूँ

(तो आप जब मेरे साथ होते हो तो मैं आत्मा मधुबन सी खिल जाती हूँ और
आप से बिछड़कर व आप के बिना मैं एक रेगिस्तान सी विरान बन जाती हूँ।)

बिन तेरे मैं क़तरा भी नहीं

(अगर आप साथ हो तो मेरा अस्तित्व एक अनंत महासागर सा शक्तिशाली हो जाता और
अगर आप मेरे साथ नहीं तो मेरा अस्तित्व एक पानी के बूँद जितना भी नहीं।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ X 2

@@@@@@@@@

तू मेरे चेहरे पे है
राहत सा जो ठहरा हुआ

(मेरे सिकीलधे बाबा,
आपको पाकर दिल में जो एक ही अनहद नाद निकल रहा है कि
"जो पाना था सो पा लिया"
उस कारण, मैं जिस स्थूल शरीर को ले कर पार्ट बजा रहा हूँ उस शरीर के चेहरे पर बेफिक्र बादशाह सी राहत समान ठहरे हुए हों आप।)

मैं भी तेरे हाथों में
क़िस्मत सा हूँ, बिखरा हुआ

(जैसे किस्मत की लकीरें हाथ से मिटाई नहीं जा सकती...
वैसे ही मैं भी तुम्हारे हाथों में किस्मत की लकीरों सा बिखरा हुआ हूँ
अर्थात माया,प्रकृति और सर्व आत्माएं इकठे होकर भी मुजे आपसे और आपको मुज से संकल्प मात्र भी जुदा नहीं कर सके।)

तू मेरी रूह सा है
तुझको छू के मैं ज़िंदा लगूं

(जैसे शरीर में अगर आत्मा न हो तो उस शरीर की कोई भी value नहीं होती।
वैसे ही मैं शरीर हूँ और आप मेरी आत्मा...
तो मैं शरीर आप आत्मा से combined रह कर ही अपने को जिन्दा महसूस करता हूँ।)

जब भी मैं मुझको देखूं
मुझ में भी मैं तुझ सा लगूं

(और इसीलिए तो...
जब भी मैं अपने को देखती हूँ तो 'विष्णु एवं शंकर-पार्वती के चित्र मुआफ़िक' हम दोनों एक दूजे में समाये हुए होने के कारण, जैसे आप हो वैसे ही मैं मुजको सर्व शक्तिओ/गुणों में आपके समान सारे ब्रह्मांड का मालिक अभी से ही महसूस करता हूँ।)

तेरे होने से ही मेरा होना है
तुझको खोना जैसे खुदको खोना
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ
तू जो है तो मैं हूँ, यूँ जो है तो मैं हूँ

Other Movie Songs to submerge
in the love of supreme
↓
Click